P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-9* May- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत गणित विषय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि व आत्मप्रत्यय का अध्ययन

A Study of Vocational Interest and Self-Concept of Students of Mathematics Subject studying in Secondary Schools

Paper Submission: 04/05/2021, Date of Acceptance: 21/05/2021, Date of Publication: 24/05/2021

राहुल कनौजिया
शोधार्थी,
शिक्षा विभाग,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,
मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

विजय जायसवाल
प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष एवं संकायाध्यक्ष,
शिक्षा विभाग,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,
मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों के गणित विषय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि व आत्मप्रत्यय का अध्ययन करना है। इस अध्ययन में हापुड़ जिले के सरकारी व निजी विद्यालयों से 160 विद्यार्थियों को यादृच्छिक प्रतिचयन की लॉटरी विधि द्वारा लिया गया है। शोध उपकरण में डॉ० एस०पी०कुल श्रेष्ठ के 'व्यावसायिक रुचि प्रपत्र' एवं डॉ० मुक्ता रानी रस्तोगी के 'आत्मप्रत्यय मापनी' को प्रयुक्त किया गया है। अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि माध्यमिक विद्यालयों के गणित विषय के छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है जब कि उनके आत्मप्रत्यय में सार्थक अन्तर पाया गया है। इसी प्रकार सरकारी तथा निजी विद्यालयों के गणित विषय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि और आत्मप्रत्यय में सार्थक अन्तर पाया गया है।

The main objective of this study is to study the vocational interest and self-concept of the students of mathematics subject of secondary schools. In this study 160 students from government and private schools of Hapur district were taken by lottery method of random sampling. Dr. S.P. Kulshrestha's 'Vocational Interest Record' and Dr. Mukta Rani Rastogi's 'Self-concept scale' have been used as research tool. The results of the study show that there is no significant difference in the vocational interest of the students of mathematics subject of secondary schools, while a significant difference has been found in their self-concept. Similarly, a significant difference has been found between vocational interest and self-concept of the students of mathematics subject of government and private schools.

मुख्य शब्द : गणित विषय के विद्यार्थी, सरकारी–निजी विद्यालय, व्यावसायिक रूचि व आत्मप्रत्यय।
Students of Mathematics Subject, Government-Private Schools, Vocational Interest and Self-Concept.

प्रस्तावना

शिक्षा मानवीय समाज को अज्ञान रूपी अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसारित करती है और साथ ही उनके आंतरिक चक्षु खोलती है, जिसके फलस्वरूप उन्हें अलौकिक व आत्मिक प्रकाशस्तम्भ की प्राप्ति होती है। शिक्षा द्वारा सम्पूर्ण मानव जाति की वैयक्तिकता का उत्थान सम्भव है इन सभी विभिन्न गुणों के आधार पर शिक्षा को 'कामधेनु' उपनाम से पदांकित करना अतिश्योक्ति न होगी। मानव जाति का सर्वांगीण विकास करने ओर उन्हें स्वतः यथेष्ट (आत्मनिर्भर) बनाने में शिक्षा का प्रमुख दायित्व रहा है, स्वतः यथेष्ट हेतु रोजगारपरक शिक्षा ग्रहण करना अति आवश्यक है। इनके संबंध में यह अनिवार्य है कि संस्थायें उपाधियों को केवल वितरित ही न करें अपितु उन्हें इच्छानुसार रोजगार प्राप्त करने में सहायता प्रदान करें। व्यक्ति द्वारा हस्तकला और तकनीकी

ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात जीविकोपार्जन के लिए अन्य व्यक्तियों पर आश्रित न रहे वरन स्वंय की आजीविका का निर्वाह करे। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने में असफल रही है जिस कारण से बेरोजगारों की संख्या तीव्र गति से बढ़ रही है परिणाम स्वरूप उनमें आत्मविश्वास का अभाव पाया जाने लगा है। इन सभी समस्याओं से निदान पाने की दृष्टि से माध्यमिक स्तर पर कक्षा ग्यारह से विद्यार्थियों को उनकी रुचियों, आर्थिक स्थितियों एवं समाज में उपयोग के आधार पर व्यावसायिक रुचियों व व्यावसायिक दृष्टिकोणों को विकसित किया जाना चाहिये। ताकि विद्यार्थी समुचित निर्देशन व परामर्श को पाकर व्यक्तिगत रूप से अवसर को पहचाने और भविष्य में खुशहाल आजीविका अर्जित करें। व्यावसायिक रुचि की भूमिका निर्वाह में आत्मप्रत्यय की विशिष्ट प्रधानता है।

समाज के प्रत्येक व्यक्ति का आत्मप्रत्यय खुद के विचार पद्धतियों व संदर्श पर निर्भर करता है, आत्मप्रत्यय व्यक्ति का किरण–केन्द्र होता है। जिस वातावरण में वह समाविष्ट होता है वह प्रत्यय आत्म होता है और अन्य वातावरण के प्रति जो प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया करता है वह प्रत्यक्ष आत्म होता है। आत्मप्रत्यय के अंतर्गत व्यक्ति में 'मैं ऐसा हूँ', 'मैं हूँ' जैसी भावनायें निहित होती हैं जब कि प्रत्यक्ष आत्म में वह मेरा कुटुम्ब, मेरी पाठशालय इत्यादि को आत्मसात करता है। शुरुआती समय में किसी बच्चे की संवेदना व अनुभव व्यवस्था रहित और अस्पष्ट होते हैं लेकिन जब वह बच्चा धीरे–धीरे बड़ा होता है तो वह उचित वातावरण में नवीन संप्रत्ययों को सीखता जाता है और अपने आत्मप्रत्यय में कल्पनायें, विचार, स्वयं के दृ ष्टिकोणों को सम्मिलित करता है। मूल रूप से व्यक्ति के मूल्यों, सोच–विचारों, खुद की मान्यताओं से आत्मप्रत्यय का निर्माण होता है।

शिक्षा का व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान है। व्यक्ति शिक्षा ग्रहण करके अपनी इच्छा के अनुसार किसी वस्तु अथवा व्यवसाय को हाँसिल करता है। किसी भी व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार व्यवसाय को प्राप्त करने के लिए उस व्यवसाय के प्रति रुचि, पर्याप्त बुद्धि व उचित निर्देशन का होना नितांत आवश्यक है। मानव जीवन में रुचियों का विशेष महत्व होता है जब उसे अपनी आकांक्षानुसार कोई कार्य प्राप्त होता है तो वह उसे पूर्ण–लगन एवं कुशलता पूर्वक सम्पन्न करता है उसी प्रकार व्यक्ति को जब अपनी योग्यता व रुचि के अनुसार व्यवसाय प्राप्त होता है तब उसे प्रचुर मात्रा में आत्म संतुष्टि व सफलता की प्राप्ति होती है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी अपने जीवन को सुखमय–आनन्दमयी बनाने के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार की योजनाओं का निर्माण करते हैं ताकि वे अपने भावी जीवन को स्वावलंबी बना सकें। इसके लिए वे अपने गुरुजनों, माता–पिता व अपने मित्रों से उपयुक्त परामर्श को प्राप्त करते हैं और अपनी रुचि, सामर्थ्यनुसार व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में विषयों का चुनाव करते हैं। किसी व्यवसाय को चुनने में व्यक्ति के आत्मप्रत्यय का विशेष योगदान होता है। आत्मप्रत्यय वह स्तर होता है जिसके अंतर्गत व्यक्ति अपने खुद के बारे में तथा समाज के संदर्भ में क्या भाव, विचार या धारणायें रखता है, को सम्मिलित किया जाता है अर्थात आत्मप्रत्यय से अभिप्राय व्यक्ति का समालोचनात्मक रूप से स्वयं के किये गये मूल्यांकन से है। प्रस्तुत अध्ययन में आत्मप्रत्यय व व्यावसायिक रुचि के अध्ययन करने की आवश्यकता इसलिए महसूस हुई ताकि विद्यार्थी गण अपनी खुद की अभिलाषाओं, धारणाओं को जाने जिससे वे अपनी रुचि, योग्यता व क्षमता के अनुसार अपने व्यवसायों को चुने ताकि उन्हें उचित उपलब्धि व संतुष्टि प्राप्त हो सके।

संबंधित साहित्य का संक्षिप्त सर्वेक्षण

मोंडल (2018) ने "माता पिता के कारकों के संबंध में माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों के व्यावसायिक रूचि का अध्ययन" किया। जिसका उद्देश्य माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि पर अभिभावक के व्यवसाय, मासिक आय और शैक्षिक पृष्ठभूमि के प्रभाव की जांच करना था। इसके लिए उन्होंने पश्चिमी बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले के विभिन्न स्कूलों से 200 विद्यार्थियों (105 बालक व 95 बालिकाओं) को उद्देश्य पूर्ण न्यादर्श विधि द्वारा लिया गया, परिणामों में उन्होंने पाया कि माध्यमिक स्कूलों के छात्रों के माता–पिता की मासिक आय, शैक्षिक पृष्ठभूमि और व्यवसाय क्षेत्र के संबंध में सार्थक अंतर था। गुप्ता (2019) द्वारा "माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का लिंग के संबंध में तुलनात्मक अध्ययन" किया गया। न्यादर्श में मेरठ जिले के 100 विद्यार्थियों (50 छात्र व 50 छात्राओं) को लिया गया था। उपकरण रूप में बी०पी० बंसल और डी०एन० श्रीवास्तव द्वारा निर्मित व्यावसायिक रुचि मापनी को उपयोग में लाया गया। परिणामों से पता चला कि लिंग भिन्नता के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यावसायिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण अंतर था। सैनी (2018) ने "बी०एड० शिक्षकों एवं अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों (बी०ए०, बी०एससी० एवं बी०कॉम०) के आत्म प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन" किया। शोध हेतु न्यायदर्श रूप में पांच बी०एड० महाविद्यालयों तथा पांच दूसरे स्नातक स्तरीय कॉलेजों से 50–50 अध्यापकों को चुना गया, आंकड़ों के लिए मुक्ता रानी रस्तोगी की आत्मप्रत्यय मापनी को प्रयुक्त किया गया। निष्कर्ष रूप में उन्होंने पाया कि बी०एड० अध्यापकों के आत्मप्रत्यय का स्तर समान था जबकि अन्य स्नातक स्तर के अध्यापकों के आत्मप्रत्यय में सार्थक अंतर था।

अलरजही (2019) के शीर्षक "ग्रेड एंड जेंडर इफेक्ट्स ऑन सेल्फ कॉन्सेप्ट डेवलपमेंट" का उद्देश्य ओमानी किशोरों के स्वयं की अवधारणा के चार आयामों (उपस्थिति, स्कूल, अभिभावक संबंध एवं सहकर्मी संबंध) के विकास पर ग्रेड, लिंग और उनकी अंतःक्रिया के प्रभाव की जांच करना था। अध्ययन हेतु ओमान में 2 जिलों के ग्रेड 7 और 11 में नामांकित विद्यार्थियों में से 651 विद्यार्थियों का चयन किया गया। अध्ययन के परिणामों ने दर्शाया ग्रेड और लिंग अंतःक्रिया उपस्थिति और अवधारणा के विकास को प्रभावित करती है जबकि अंतः क्रियात्मक प्रभाव का अन्य आयामों पर कोई प्रभाव नहीं था इसके अलावा लिंग और ग्रेड पर आत्म अवधारणा के कुछ आयामों में अंतर पाया गया था।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-9* May- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन के उद्देश्य निम्न प्रकार हैं–

1. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत गणित विषय के छात्र तथा छात्राओं की व्यावसायिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत गणित विषय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत गणित विषय के छात्र तथा छात्राओं के आत्मप्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत गणित विषय के विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की शून्य परिकल्पनाएँ

अध्ययन की शून्य परिकल्पनाएँ इस प्रकार हैं–

1. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत गणित विषय के छात्र तथा छात्राओं की व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत गणित विषय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत गणित विषय के छात्र तथा छात्राओं के आत्मप्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत गणित विषय के विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मुख्य शब्दों की संक्रियात्मक परिभाषा

गणित विषय के विद्यार्थी– प्रस्तुत शोध अध्ययन में गणित विषय के विद्यार्थियों से आशय कक्षा दस में पढ़ने वाले गणित विषय के छात्र व छात्राओं से है।

व्यावसायिक रुचि– व्यावसायिक रुचि से आशय उपयोग में लायी गयी व्यावसायिक रुचि प्रपत्र (डॉ० एस०पी० कुलश्रेष्ठ) में दिए गये व्यवसायों को पसंद करने या न करने पर प्राप्त मूल प्राप्तांकों से है, इस प्रपत्र में रचनात्मकता, व्यावसायिक, साहित्यिक, वैज्ञानिकी, कार्यकारी, कलात्मक, सामाजिक, प्रत्ययकारी, कृषि व गृह संबंधी व्यावसायिक क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है।

आत्मप्रत्यय– आत्मप्रत्यय से तात्पर्य व्यक्ति का स्वयं को देखने के तरीके से है जिसके माध्यम से वह अपने व्यवहारों व सोचने के तरीकों को प्रस्तुत करता है, इस परिप्रेक्ष्य में डॉ० मुक्ता रानी रस्तोगी द्वारा निर्मित मापनी को प्रयुक्त किया गया है।

अध्ययन की परिसीमाएँ

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल हापुड़ जिले के माध्यमिक विद्यालयों को ही शामिल किया गया है।
2. इस अध्ययन में केवल 10वीं कक्षा के गणित विषय के विद्यार्थियों को ही लिया गया है।
3. यह अध्ययन व्यावसायिक रुचि व आत्मप्रत्यय तक ही सीमित है।
4. इस शोध अध्ययन में मात्र 160 विद्यार्थियों को न्यादर्श रूप में चुना गया है।
5. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल यू०पी० बोर्ड एवं सी०बी०एस०ई० बोर्ड के विद्यार्थियों को ही शामिल किया गया है।

शोध कार्यप्रणाली

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकर्ता द्वारा वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि को उपयोग में लाया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में हापुड़ शहर के सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले गणित विषय के दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों (छात्र–छात्राओं) को जनसंख्या के अंतर्गत लिया गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्शन विधि

प्रस्तुत अध्ययन के न्यादर्श में 04 सरकारी व 04 निजी माध्यमिक विद्यालयों से 80–80 विद्यार्थियों को यादृच्छिक प्रतिचयन की लॉटरी विधि द्वारा चुना गया है, जिसमें सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के (40 छात्र–40 छात्राएँ) एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के (40 छात्र–40 छात्राएँ) सम्मिलित हैं।

शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न चरों के मापन के लिए निम्नवत उपकरणों को उपयोग में लाया गया है–

1. व्यावसायिक रुचि प्रपत्र– डॉ० एस०पी० कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित।
2. आत्मप्रत्यय मापनी– डॉ० मुक्ता रानी रस्तोगी।

अध्ययन में प्रयुक्त विभिन्न सांख्यकीय विधियाँ

अनुसंधानकर्ता द्वारा वर्तमान अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण को प्रयोग में लाया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शून्य परिकल्पना नंबर–1

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत गणित विषय के छात्र तथा छात्राओं की व्यावसायिक रूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका–1

गणित विषय के छात्र तथा छात्राओं की व्यावसायिक रुचि से प्राप्त मध्यमान, मानक विचलन और टी–मान

चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वातंत्र्य मात्रा	टी–मान	सार्थकता स्तर
छात्रों की व्यावसायिक रुचि	80	114.33	33.14	158	1.92	0.05 स्तर पर असार्थक
छात्राओं की व्यावसायिक रुचि	80	106	19.95			

उपर्युक्त तालिका–1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि गणित विषय के छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रुचि प्रपत्र द्वारा प्राप्त मध्यमान क्रमशः 114.33 व 106 है और उनका मानक विचलन 33.14 व 19.95 है और इन दोनों समूह के मध्यमान व मानक विचलन के आधार पर प्राप्त टी– मान 1.92 है, जो स्वातंत्र्य मात्रा 158 तथा सार्थकता स्तर .05 पर टी–परीक्षण के तालिका मूल्य 1.98 से कम है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना नंबर–1 स्वीकृत हुई। इसका तात्पर्य यह है कि माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत गणित विषय के छात्र तथा छात्राओं की व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शून्य परिकल्पना नंबर–2

सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत गणित विषय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका–2

सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत गणित विषय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि से प्राप्त मध्यमान, मानक विचलन और टी–मान

चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वातंत्र्य मात्रा	टी–मान	सार्थकता स्तर
सरकारी विद्यालयों के गणित विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि	80	96.52	15.10	158	7.13	0.01 स्तर पर सार्थक
निजी विद्यालयों के गणित विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि	80	123.75	30.49			

उपरोक्त तालिका–2 से पता चलता है कि सरकारी व निजी विद्यालयों के गणित विषय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि से प्राप्त मध्यमान क्रमशः 96.52 व 123.75 है एवं मानक विचलन क्रमशः 15.10 व 30.49 है, इन दोनों से प्राप्त टी–मान 7.13 है, जो स्वातंत्र्य मात्रा 158 तथा सार्थकता स्तर .01 पर टी–परीक्षण के तालिका मूल्य 2.61 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना नंबर–2 अस्वीकृत हुई। इससे अभिप्राय है कि सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत गणित विषय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि में सार्थक अंतर है।

शून्य परिकल्पना नंबर–3

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत गणित विषय के छात्र–छात्राओं के आत्मप्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका–3

गणित विषय के छात्र तथा छात्राओं के आत्मप्रत्यय से प्राप्त मध्यमान, मानक विचलन और टी–मान

चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वातंत्र्य मात्रा	टी–मान	सार्थकता स्तर
छात्रों का आत्मप्रत्यय	80	163.96	12.81	158	2.92	0.01 स्तर पर सार्थक
छात्राओं के आत्मप्रत्यय	80	158.43	10.87			

तालिका–3 से विदित होता है कि गणित विषय के छात्र–छात्राओं के आत्मप्रत्यय मापनी से प्राप्त मध्यमान क्रमशः 163.96 एवं 158.43 है और मानक विचलन क्रमशः 12.81 और 10.87 है इन दोनों समूह से प्राप्त टी– मान 2.92 है, जो स्वातंत्र्य मात्रा 158 तथा सार्थकता स्तर .01 पर टी–परीक्षण के तालिका मूल्य 2.61 से अधिक है। इसी प्रकार शून्य परिकल्पना नंबर–3 अस्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत गणित विषय के छात्र–छात्राओं के आत्मप्रत्यय में सार्थक अंतर है। दफारे एवं भेंडे (2016) के परिणाम इस अध्ययन के परिणामों से पुष्ट होते हैं। इनके निष्कर्ष में पुरुष छात्रों का शारीरिक और सामाजिक आत्मप्रत्यय महिला छात्राओं की तुलना में अधिक था।

शून्य परिकल्पना नंबर–4

सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत गणित विषय के विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका–4

सरकारी–निजी विद्यालयों में गणित विषय के विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय से प्राप्त मध्यमान, मानक विचलन और टी–मान

चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वातंत्र्य मात्रा	टी–मान	सार्थकता स्तर
सरकारी विद्यालयों के गणित के विद्यार्थियों का आत्मप्रत्यय	80	157.06	9.34	158	4.36	0.01 स्तर पर सार्थक
निजी विद्यालयों के गणित के विद्यार्थियों का आत्मप्रत्यय	80	165.32	13.36			

उपरोक्त तालिका नंबर–4 से ज्ञात होता है कि सरकारी व निजी विद्यालयों के गणित विषय के विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय मापनी से प्राप्त मध्यमान क्रमशः 157.06 व 165.32 है और उनका मानक विचलन 9.34 और 13.36 है और इन दोनों समूह से प्राप्त टी–मूल्य 4.36 है जो स्वातंर्त्य मात्रा 158 तथा सार्थकता स्तर .01 पर टी–परीक्षण के तालिका मूल्य 2.61 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना नंबर–4 अस्वीकृत हुई अर्थात् सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत गणित विषय के विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय में सार्थक अंतर है। इस अध्ययन के परिणाम सरसानी (2007) के परिणामों से परस्पर मिलते हैं, इनके परिणामों में भी आत्मप्रत्यय में निजी और सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों के मध्य अन्तर पाया गया था।

निष्कर्ष

अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए गए हैं–

1. माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत गणित विषय के छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रुचि समान हैं।
2. निजी माध्यमिक विद्यालय के गणित विषय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि, सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों से अधिक पाई गई है।
3. माध्यमिक विद्यालयों के गणित विषय के छात्रों का आत्मप्रत्यय, छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।
4. निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का आत्मप्रत्यय, सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है।

शैक्षिक निहितार्थ तथा सुझाव

विद्यार्थियों के स्वयं का आत्मप्रत्यय उन्हीं के शैक्षिक विकास में सहायक होता है बालक जिस प्रकार से विचार मंथन करता है उसका अंतर्मन उसी प्रकार से किसी भी कार्य के लिए प्रेरित होता है। साथ ही वह उस कार्य में अपने भावों, अधिकारों और पसंद से संबंधित अभिव्यक्ति को प्रस्तुत करता है। कभी–कभी शिक्षार्थी विभिन्न कार्यकलापों को करने के लिए स्वयं को निर्देशित करता है इन कार्यकलापों में शिक्षक द्वारा दिए गए ज्ञान व विचार समाविष्ट होते हैं जिनसे विद्यार्थी द्वारा खुद के आत्मप्रत्यय से व्यवसाय चयन में सहायता मिलती है। व्यावसायिक शिक्षा का प्रारंभ माध्यमिक स्तर से माना जाता है। बालक–बालिकाओं का व्यावसायिक पाठ्यक्रम में प्रवेश करने से पहले उनकी रुचियां और योग्यताओं को समझना अनिवार्य है इसी अवस्था में बालक सही मार्ग का चयन करता है और इसी आधार पर शिक्षा प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। अध्यापकों को चाहिए कि वह भिन्न–भिन्न बालकों के आत्मप्रत्यय के आधार पर व्यावसायिक रुचियों को जानकर उससे संबद्ध पाठ्यक्रम एवं शिक्षा की जानकारी दें ताकि बालक भविष्य में पसंदीदा व्यवसाय को चुनकर समृद्ध एवं आनन्दमयी जीवन व्यतीत कर सकें। उपरोक्त अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिये जा सकते हैं–

1. शिक्षकों को विद्यार्थियों के व्यवसाय चयन में उचित मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए।
2. अध्यापकों को बालकों के लिए व्यावसायिक शिक्षा के साथ–साथ उचित प्रशिक्षण भी प्रदान करना चाहिए ताकि वे अपनी रुचि अनुसार व्यवसाय चुनकर अपनी आजीविका चला सकें।
3. अध्यापकों को विद्यार्थियों में विषय वस्तु द्वारा आत्मप्रत्यय का विकास करना चाहिए।
4. अध्यापकों का व्यवहार स्नेह युक्त होना चाहिए ताकि विद्यार्थियों में स्वः का उचित विकास हो सके।
5. अध्यापकों को बालकों में आत्मप्रत्यय के विकास हेतु विषय वस्तु के अतिरिक्त भावात्मक पक्ष को भी स्थान देना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *शर्मा, आर०ए० (2013). शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार, मेरठः आर०लाल० बुक डिपो।*
2. *सिंह, वी० बी० एवं पहुजा, सुधा (2008). भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास. मेरठः आर०लाल० बुक डिपो।*
3. *मित्तल, एम०एल० (2005). कैरियर निर्देशन एवं रोजगार सूचना, मेरठः इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस।*
4. *कुमार, ए० (2013). मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, पटनाः मोतीलाल बनारसीदास।*
5. *गुप्ता, एस०पी० (2015). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।*
6. *मोंडल, जी०सी० (2018). माता पिता के कारकों के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन. जनरल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजी एंड इन्नोवेटिव रिसर्च, 5(8), पृष्ठ संख्या 466–474।*
7. *गुप्ता, ए० (2019). माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का लिंग के संबंध में तुलनात्मक अध्ययन. जनरल ऑफ टीचर एजुकेशन एंड रिसर्च. 14(2), पृष्ठ संख्या 34–36।*
8. *सैनी, आर०पी० (2018). बी०एड० शिक्षकों एवं अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों (बी०ए०, बी०एससी० एवं बी०कॉम) के आत्मप्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन,*

श्रृंखला एक शोध परक वैचारिक पत्रिका, 5(11), पृष्ठ संख्या 131–135।

9. *अलरजही, एम० एवं अन्य (2019). ग्रेड एंड जेंडर इफेक्ट्स ऑन सेल्फ कॉन्सेप्ट डेवलपमेंट. दि ओपन साइकोलॉजी जरनल, वॉल्यूम 12, पृष्ठ संख्या 66–75।*
10. *दफारे, पी० एवं भेंडे, आर० (2016). ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ वेल्यूज, सेल्फ कॉन्सेप्ट एंड क्रिएटिविटी अमंग अंडर ग्रैजुएट स्टूडेंट्स फ्रॉम रूलर कालेजस. आई आर ए इंटरनेशनल जरनल ऑफ एजुकेशन एंड मल्टीडिस्सिप्लिनरी स्टडीज, 4(3), पृष्ठ संख्या 373–380 ।*
11. *सरसानी, एम०आर० (2007). ए स्टडी ऑफ दि रिलेशनशिप बिटवीन सेल्फ कॉन्सेप्ट एंड एडजस्टमेंट ऑफ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स. आई–मैनेजरस जर्नल ऑन एजुकेशनल साइकोलॉजी, 1(2), पृष्ठ संख्या 10–18।*